महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997| क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

दद्दा की कविताओं में हैं राम के आदर्श : प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

मैथिलीशरण गुप्त की 135 वीं जयंती पर हुआ अंतरराष्ट्रीय कवि गोष्ठी का आयोजन

वर्धा, 10 अगस्त, 2021: राष्ट्रीय नवजागरण के कवि मैथिलीशरण गुप्त की कविताएं सबसे अधिक प्रासंगिक है। राष्ट्र की समस्याओं का निदान हम उनके 'हिंदू' काव्य में पाते हैं। उनकी कविताओं का भाव है कि मनुष्य और राष्ट्र श्रेष्ठ बने और यह सब निरंतरता में चलती रहे। दद्दा की कविता जो सर्वत्र राम का जीवन देखती है, परिवार भी राममय है, राममय इतना है कि कृष्ण में राम दिखता है और बुद्ध में भी। मनुष्य होने का आदर्श राम में निहित है। मर्यादाएं बनाना और उसका निवर्हन करना राम में देखा जा सकता है। अब मर्यादाएं

न कविता में रही और न ही शास्त्र में। समाज में मर्यादाओं की नई परिभाषा आ गई है। दद्दा की कविताएं सीख देती हैं कि हम वैसा समाज बनाएं जिसमें संवेदना, करुणा, नेह, सर्वविद् समरस की समता हो।

उक्त उद्बोधन महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने व्यक्त किये। वह राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की जयंती पर राष्ट्रकवि स्मृति समिति, वर्धा द्वारा तरंगाधारित आयोजित अंतरराष्ट्रीय कवि गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे। उन्होंने 'धुआं केवल धुआं, पर्वत में आग लगी, घाटी में शोर हुआ, धुआं धुआं धुआं...', 'सच कहने पर गाली खाता हूं' सुनाकर श्रोताओं को रोमांचित कर दिया। प्रो. शुक्ल ने वाक् और देह, दोनों के चिकित्सक डॉ. ओ.पी. गुप्त और डॉ. अनुपमा गुप्ता को गुप्त जी की जयंती पर 22 वर्षों से सुंदर साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित कराने की सराहना की।

नवगीतकार बुद्धिनाथ मिश्र (देहरादून) ने कहा कि मैथिलीशरण गुप्त ने खड़ी बोली कविता को संवारा है। आज हम जिस कविता के मचान पर बैठे हैं, उसका खंभा गुप्तजी ने खड़ा किया। उन्होंने गीत 'चाह किसी घुंघट वाली के हाथों का दर्पण बन जाउं, या काजल वाली आंखों का तीरता हुआ स्वप्न बन जाउं' सुनायी। उन्होंने अपनी बहुचर्चित गीत 'एकबार और जाल फेंक रे मछेड़े, जाने किस मछली में बंधन की चाह हो' का गायन किया। डॉ. सरोज गुप्ता ने दद्दा पर केंद्रित दो रचनाएं सुनाते हुए कहा कि रामभक्त के अभिनंदन से, स्वयं राम का अभिनंदन है। राष्ट्रकवि के स्मरण मात्र से सकल राष्ट्र का अभिनंदन है।

सोफिया विश्वविद्यालय, बुल्गारिया के प्रो. आनंदवर्धन शर्मा ने अपना गीत 'याद आया गांव, आया याद फिर बचपन... है समय भारी कठिन पर हारना कैसे, हम लिखेंगे गीत-गाथा, तुम नई कविता लिखो, चलो बच्चों संग बच्चे बन यहां खेलें' सुनाया। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रो. हरीश अरोड़ा ने कविता सुनायी कि, 'अधरों के कंपन से जीवन बंध सभी टूटे, कहीं छिपी रोती कलियों से दर्द नए फूटे, सात सुरों को इकतारे ने होले से दुलराया, जिनमें दर्द नहीं होता वो गीत नहीं होते।' सुधाकर

शर्मा (बालाघाट) ने क्या दद्दा मांसल प्रेम चाहते थे, से बात शुरू करते हुए कहा कि दद्दा ने अपनी रचनाओं में आत्मीय प्रेम की अभिव्यक्ति दी है, प्रेम उनके मित्र थे।

काव्य गोष्ठी में नीदरलैंड के डॉ. पुष्पिता अवस्थी, भोपाल के देवेंद्र कुमार जैन, कुमकुम गुप्ता, झांसी के डॉ. कुसुम गुप्ता, सागर के डॉ. सरोज गुप्ता ने मैथिलीशरण गुप्त के संस्मरणों सहित काव्यमय प्रस्तुतियों ने समा बांध दिया। स्वागत वक्तव्य में डॉ. ओ.पी. गुप्त ने कहा कि राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की जयंती पर राष्ट्रकवि स्मृति समिति, वर्धा द्वारा आयोजित यह 22वां वर्ष है। उन्होंने कविता सुनायी, 'गहनतम तिमिर में खोजते प्रकाशपुंज, भारतेंदु युग से द्विवेदी युग परिवर्तन, 19वीं सदी का वह अवरोहण काल, साहित्य जगत में अवतरित मैथिलीशरण गुप्त, कविता कृतित्व से हिंदी को सम्मान दिया, महात्मा ने स्वयं राष्ट्रकवि का मान दिया, गांधीवाद से ओतप्रोत इष्ट तुम्हारे राम, हे युगद्रष्टा तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम।' डॉ. अनुपमा गुप्ता ने संचालन व आभार व्यक्त किया। इस दौरान बुल्गारिया में भारत के राजदूत संजय राणा, प्रो. कृपाशंकर चौबे, समिति के सदस्य डॉ. हेमचंद्र वैद्य, डॉ. अनिल दुबे, डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, डॉ. दिलीप गुप्ता, डॉ. अमित विश्वास, नरेंद्र दंडारे सहित नीदरलैंड, बुल्गारिया, दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद, भोपाल, सागर, झांसी, वर्धा के सुधी जन जुड़े रहे।

गुप्त यांच्या कवितेत राम यांचा आदर्श : प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

वर्धा, 10 ऑगस्ट, 2021: राष्ट्र कवी मैथिलीशरण गुप्त यांच्या कवीतांमध्ये राम यांचा जीवनआदर्श दिसूनयेतो असे प्रतिपादन महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाचे कुलगुरू प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल यांनी केले. ते गुप्त यांच्या जयंती निमित्त आमासी आंतरराष्ट्रीय कवी संमेलनात अध्यक्ष म्हणून बोलत होते. या प्रसंगी त्यांनी 'धुआं केवल धुआं, पर्वत में आग लगी, घाटी में शोर हुआ, धुआं धुआं धुआं..', 'सच कहने पर गाली खाता हूं' इत्यादि कवीता सादर केल्या. कवी सम्मेलनात नवगीतकार बुद्धिनाथ मिश्र (डेहराडून) यांनी 'चाह किसी घुंघट वाली के हाथों का दर्पण बन जाउं, या काजल वाली आंखों का विरता हुआ स्वप्न बन जाउं' तसेच 'एकबार और जाल फेंक रे मछेड़े, जाने किस मछली में बंधन की चाह हो' या कविता सादर केल्या.

सोफिया विश्वविद्यालय, बुल्गारिया चे प्रो. आनंदवर्धन शर्मा यांनी 'याद आया गांव, आया याद फिर बचपन... है समय भारी कठिन पर हारना कैसे, हम लिखेंगे गीत-गाथा, तुम नई कविता लिखो, चलो बच्चों संग बच्चे बन यहां खेलें' गीत सादर केले. महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा येथील प्रो. हरीश अरोड़ा यांनी 'अधरों के कंपन से जीवन बंध सभी टूटे, कहीं छिपी रोती कलियों से दर्द नए फूटे, सात सुरों को इकतारे ने होले से दुलराया, जिनमें दर्द नहीं होता वो गीत नहीं होते' कविता सादर केली. यावेळी डॉ. सरोज गुप्ता आणि सुधाकर शर्मा (बालाघाट) यांनी ही कविता सादर केल्या.

कवी संमेलनात नीदरलैंडच्या डॉ. पुष्पिता अवस्थी, भोपाळचे देवेंद्र कुमार जैन, कुमकुम गुप्ता, झांसीच्या डॉ. कुसुम गुप्ता यांनी कविता ऐकविल्या. स्वागत भाषण डॉ. ओ.पी. गुप्त यांनी केले. डॉ. अनुपमा गुप्ता यांनी संचालन व आभार व्यक्त केले. राष्ट्रकवी मैथिलीशरण गुप्त यांच्या जयंती निमित्त दरवर्षी राष्ट्रकवी स्मृति समिती वर्धा यांच्या द्वारे जयंती कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात येते. गेल्या 22 वर्षांपासून डॉ. ओ. पी. गुप्ता आणि त्याच्या कुटुंबीयाकडून गुप्त जयंती कार्यक्रमाची परंपरा सुरू आहे यावेळी बुल्गारिया मधील भारताचे राजदूत संजय राणा, प्रो. कृपाशंकर चौबे, डॉ. हेमचंद्र वैद्य, डॉ. अनिल दुबे, डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी, डॉ. दिलीप गुप्ता, डॉ. अमित विश्वास, नरेंद्र दंडारे व नीदरलैंड, बुल्गारिया, दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद, भोपाळ, सागर, झांसी इत्यादि प्रामुख्याने उपस्थित होते.